ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

मन्नू भंडारी के साहित्य में संवेदना

Condolences in the literature of Manu Bhandari

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

ईश्वर सिंह
अध्यापक,
शिक्षा विभाग,
रा. उ.प्रा. विद्यालय,
चाँदबासनी, डीडवाना
(नागौर) राजस्थान, भारत

सारांश

जब कोई रचनाकार कृति की रचना करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य होता है अपनी अनुभूति एवं मनः तव्य को श्रोता या पाठक के सामने रखना। लेखक अपने विचारों का सम्प्रेषण रचना के माध्यम से करता है एवं कथाकार अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील एवं भावुक होता है। अतः वह अपनी युग परिस्थितियों से प्रभावित होता है। कथाकार युगीन परिवेश के आधार पर अपने विचार रोचकता एवं कलात्मकता के साथ रचना में अभिव्यक्त करता है। युग परिवेश की प्रतिक्रिया स्वरूप जब लेखक के मन में भाव जागृत होता है तब चिन्तन की प्रक्रिया के साथ वह भावना संवेदना में परिणित हो जाती है । वही संवेदना कृति में अभिव्यक्त हो जाती है।

एक सफल कथाकार अपने विचार विशेष को वस्तु पात्र और परिवेश के साँचे में ढाल कर प्रकट करता है यही कथा कृति की संवेदना कहलाती है । वृहद् हिन्दी कोष में संवेदना को इस प्रकार परिभाषित किया गया है – "किसी पदार्थ या वस्तु को अनुभव करने की वह गहराई है जो नवलेखन में बहुत चर्चित होती है , संवेदना कहलाती है ।"1

When a creator creates a work, his main objective is to put his experience and mind in front of the listener or reader. The author communicates his thoughts through composition and the narrator is more sensitive and emotional. Hence, he is influenced by his age circumstances. The narrator expresses his ideas in the composition with interestingness and artistry based on the epoch environment. When the emotion in the writer's mind is awakened in response to the era, then with the process of thinking, that feeling gets converted into sensation. The same sensation is expressed in the work.

A successful storyteller reveals his ideas in the form of objects and surroundings, this story is called the sensation of the work. In the larger Hindi dictionary, sensation is defined as this - the depth of feeling of a substance or object which is very much discussed in the new writing is called sensation.

मुख्य शब्द : उद्देश्य, अनुभूति, श्रोता, सम्प्रेषण, संवेदनशील, भावुक, युगीन परिवेश, अभिव्यक्त, परिणित, वस्तु, नवलेखन।
Purpose, cognition, listener, communication, sensitive, emotional, epoch-making, express, transform, object, innovation.

प्रस्तावना

कृतिकार जहाँ भावों की परिसीमा होती है वहाँ प्रस्तुतीकरण में नवीन उद्भावनाओं के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की अधिक सफलता एवं प्रभावोत्पादकता से सम्प्रेषित करता है।बिना कला का आश्रय लिए रचनाकार अपनी अनुभूतियों एवं विचारों को प्रकट नहीं कर सकता लेकिन वह भावों के अनुरूप ही वस्तु पात्र एवं परिवेश का आयोजन करता है अतः कला और साहित्य का प्राण संवेदना ही है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा में आत्मा को ही स्वच्छ स्थान प्राप्त होता है। उसी प्रकार कला एवं भाव उभय तत्वों में भाव का स्थान सर्वोच्च है। संवेदना के आधार पर कथाकृति को विभिन्न वर्गों में वगीकृत किया जा सकता है। किसी–किसी कथाकृति में संवेदना के दो रूप दृष्टिगोचर होते है। जिन्हें मूल संवेदना एवं सह संवेदना के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

मूल संवेदना

कृतिकार किसी रचना की ओर प्रवृत्त होता है तब उसके सामने एक विशिष्ट भाव अथवा संदेश होता है। वह अपने आस–पास के परिवेश से प्रेरित होकर उन भावों को आन्दोलित कर कृति में अभिव्यक्त करता है। अपने तथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए उसे पात्र, वस्तु तथा परिवेश की कल्पना करनी होती है और उसमें यथार्थ का रंगभर कर कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करना होता है अतः कहा जा सकता है कि कृतिकार की कृति में मूल कथावस्तु मुख्य पात्र और मूल परिवेश के माध्यम से जिस तथ्य की अभिव्यक्ति होती है उसे मूल संवेदना कहते है ।

सह संवेदना

कहानी में मुख्य संवेदना की अभिव्यक्ति मूल वस्तु, मूल परिवेश तथा मुख्य पात्र द्वारा ही होती है । किन्तु उपन्यास, लघु उपन्यास, अथवा लम्बी कहानी में मूल संवेदना की अभिव्यक्ति मूल वस्तु, मूल परिवेश एवं मुख्य पात्र के अलावा सहायक वस्तु, गौण परिवेश एवं सहयोगी पात्रों द्वारा भी की जाती है और संवेदना की यह स्थिति सह संवेदना कहलाती है। सह संवेदना मूल संवेदना को ही प्रकट करने में प्रत्यक्षतः अथवा परोक्षतः सहायक होती है किन्तु वह अपनी पृथक अनुभूति की व्यंजना भी करती है । संस्कृत साहित्य शास्त्रियों के मतानुसार स्थायी भाव के अनुरूप कथा कृति में अनुभव की उपस्थिति हो सकती है जो स्थायी भाव के अनुरूप

मन्नू भंडारी के साहित्य में मूल संवेदना की अभिव्यक्ति

सामान्यतः विवाह रूपी संस्था की स्वीकृति के मूल दो आधार है :– सामाजिक सुरक्षा एवं कामतृप्ति । अगर इन दो दृष्टियो ंको आधुनिक संदर्भो की कसौटी पर परखा जाये तो यह बिल्कुल सही है कि आज नारी आर्थिक स्वतंत्रता के कारण आत्मनिर्भर है । असुरक्षा के भय से मुक्त है और आज व्यक्ति की शारीरिक तृप्ति के लिये भी विवाह संस्था को अनिवार्यता पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है । कई नए कहानीकारों ने तो विवाह संस्था को एक पेशा एवं समझौता माना है जिनमें सुदर्शन चोपड़ा, निरूपमा सेवती एवं उषा प्रियंवदा का नाम अग्रणीय है ।

विवाह बोध

मन्नू भण्डारी ने एक दो कहानियों को छोड़कर कहीं भी विवाह संस्था का विरोध नहीं किया है क्योंकि भारत जैसे देश में जब तक नारी पूर्णतः प्रबुद्ध, आत्मनिर्भर और आधुनिक बोध से सम्पन्न नहीं होगी तब तक विवाह संस्था का कोई विकल्प नहीं सोचा जा सकता 'एखाने आकाश नाइं' सुषमा और गौरा अभिनेत्री की रंजना 'घुटन' की मोना, यह सच है कि दीपा सामाजिक सुरक्षा के लिए विवाह–संस्था के औचित्य को स्वीकारती है इनके अतिरिक्त 'बन्द दराजों का साथ' की मंजरी जैसी विवाहिता महिलाएँ विवाह संस्था को ही सही मार्ग के रूप में मानती है ।

प्रेम बोध

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी 'उसने कहा था', जय शंकर प्रसाद 'आकाशदीप', पुरस्कार, 'सुदर्शन' 'प्रेमतरू' आदि कहानियों में प्रेम का चित्रण बड़े ही स्थूल रूप से हुआ लेकिन समकालीन कहानियों में प्रमाणित अनुभव के आलोक में प्रेम के यथार्थ चित्रण को महत्त्व दिया है । डॉ.सुधांशु जी का प्रस्तुत वक्तव्य सर्वथा सटीक है कि – ''यहाँ प्रेम के लिए प्रेम न कर प्रेम को प्राकृतिक प्रवृत्ति मान उसे जीवन के सुख–दुखात्मक आस्वाद के साथ अनुभूति के स्तर पर झेलता हुआ जीता है ।''2

मन्नू भण्डारी ने प्रेम को दैनिक आवश्यकता के रूप में प्रतिफलित किया है । ईसा के घर इन्सान की 'एंजीला' यही सच है की 'दीपा', एखाने आकाशनाइं की 'गोरा', सुषमा और गीत का चुम्बन की 'कुन्ती' प्रेम के सुखद क्षणों के लिए बैचेन है ।

अलगाव बोध

अलगाव बोध या परायापन आधुनिक जिन्दगी का सर्वाधिक अभिशप्त पहलू है । व्यक्ति अपने आप पर ही केन्द्रीत हो गया है उसके जीवन में स्वार्थपरता के सिवा कुछ नहीं हैं । अस्तित्व सुरक्षा की खातिर प्रयत्नशील होने से जीवन अनवरत यंत्रणाओं का सिलसिला हो गया है । पारस्परिक सम्बन्धों में खोखलेपन से स्नेहजन्य ऊष्मा का समापन हो गया है । आजकल आदमी अपनों के भीतर भी पराएपन के एहसास से शंकित है और बाजार की लम्बी भीड़ में भी अकेलेपन की पीड़ा से पीड़ित होने को विवश है । इस अलगाव बोध का एहसास मन्नू भण्डारी की 'शायद', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'अकेली', एखाने आकाश नाइं, 'मजबूरी' आदि कहानियों में पूर्णतः दृष्टिगत होता है। 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की दर्शना अतृप्त काम बुभुक्षा की परितृप्ति के लिए हरीश के सम्पर्क में आती है । यद्यपि उसका प्रयास परिस्थितियों की उपज है और वह एक कर्तव्यपरायणा व सेवाभावी नारी है तथापि समाज उसे दुश्चरित्रा मानता है । वह स्वावलम्बी होकर भी अलगाव बोध से यहां तक पीड़ित है कि अकेलेपन से सशंकित होते – होते जीवन से आँख मूंद लेती है ।

'शायद' कहानी के राखाल नामक पात्र की मानसिकता का चित्रण इस रूप में व्यक्त हुआ है – ''उसे माला पर क्रोध आने लगा । जो चली गई उसका ख्याल है और जो आया है, उसकी कोई चिंता नहीं जाने क्यों उसे लगने लगा,जैसे वह किसी और के बारे में सुन रहा है । मानों उस मृत बच्ची से माला के दुःख से उसका अपना कोई सम्बन्ध नहीं है। ''3

सम्बन्धों की विकरालता का बोध

आज व्यक्ति समाज सापेक्ष न होकर केवल आत्मकेन्द्रित हो रहे है वृद्ध माता–पिता बुढ़ापे में चिन्ताओं के बोझ से दबे है । पति – पत्नी में भी अविश्वास की खाई बढ़ रही है । आज हमारे सामाजिक संबंधों एवं पारिवारिक रिश्तों पर अर्थतंत्र हावी है। जिससे आत्मीय रिश्तों में विघटन हो रहा है और इस संबंधों के विघटन और बिखराव की सही तस्वीर उषा प्रियंवदाजी की 'वापसी', राजेन्द्र यादव की 'बिरादरी बाहर' और यशपाल जी की 'समय' आदि कहानियों में दृष्टव्य है तथापि

समकालीन कहानिकारों ने भी जीवन के इस पहलू को अत्यन्त सजगता और बारीकी से चित्रित किया है ।

मन्नू भण्डारी ने जिस पैनेपन से समाज का निरीक्षण करके सम्बन्धों के विकराल स्वरूप का निरूपण किया है, वह अपने आप में अनुपम है। उनकी शायद 'यहीं सच है', 'एखाने आकाश नाइं', 'सजा', 'अकेली' आदि कहानियों में संबधों का विघटित रूप पूर्ण परिणाम में उभरा है ।

'शायद' कहानी का राखाल दाम्पत्य बन्धन एवं संबंधों में ठण्डक महसूस करता है। वह अपने घर में स्वयं को पराया अजनबी पाता है उसे अपनी गैर हाजिरी में बच्चों के बिगड़ने की दुश्चिंता बहुत कचोटती है । 'शायद' कहानी में आर्थिक स्थिति सुधरी होती है तो उसके जीवन में अकेलापन, सूनापन, परायापन जैसे विकृत तत्त्व न आ पाते। निम्नलिखित उदाहरण में राखाल की मानसिक स्थिति देखिएः– ''अनायास ही रंजू की बात याद आई की जहाजवालों को तो शादी करनी ही नहीं चाहिए । यहाँ रात दिन मशीनों से सिर फोड़ो, पैसा मिले तो घरवालों की हाजिरी में । भैया, हम अच्छे है जिस घाट उतरे, तफरी करली, न किसी का देना न लेना ।''4

'यही सच है' और 'एखाने आकाश नाइं' की सुषमा और दीपा विवाह सूत्र में बंधने के लिए अपने पारिवारिक सदस्यों से विद्रोह करती है, ये युवतियां संबंधों के खोखलेपन एवं प्रपंचमात्र को समझकर अपना मार्ग स्वयं तय करती है ।

'सजा' कहानी संबंधों के खोखलेपन का निर्मम चित्र है । विपत्तिग्रस्त होने पर समीपस्थ संबंधी तक आँख बदल लेते है, दूसरे लोगों की बात ही क्या है?

'बंद दराजों का साथ' कहानी में मंजरी एवं उसके पति के बीच टूटते दाम्पत्य संबंधों का चित्रण डॉ. देवीशंकर अवस्थी जी ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है – ''आज के तनाव को यह कहानी पूरी गहराई से आंकती है । मनुष्य न तो छूटी हुई जिन्दगी को छोड़ पाता है और न चुनी हुई जिन्दगी को अपना सकता है। दोनों ओर खींचता जाकर यह क्षत–विक्षत हो जाता है ।'' 5

अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण

मन्नू जी की कहानियों में अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण बड़े सूक्ष्म और मौलिक ढंग से हुआ है । अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण स्वातंत्रोत्तर कहानियों में ज्यादातर रूप से हुआ है । मन्नू जी की 'तीसरा आदमी' और 'यही सच है' कहानी में सशक्त अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण किया गया है । 'तीसरा आदमी' कहानी में सतीश के मन में जो अन्तर्द्वन्द्व है वह उसकी आत्महीनता और विश्वासहीनता का परिणाम है । उसमें पौरूषहीनता की भावना तीव्र रूप से घर करके बैठी हुई है, उससे वह अन्तर्द्वन्द्व में ही मग्न हो जाता है । उसकी यह पौरूषहीनता की भावना ही उसके अन्तर्द्वन्द्व के लिए कारण बन जाती है और उसमें वह अश्लील से अश्लील बाते भी सोचता चला जाता है । उस प्रकार का सोचना देखकर हमें यही लगता है कि एक पढ़ा लिखा नौकरी करने वाला पति सतीश अपनी पत्नी के परिचित व्यक्ति के साथ बातचीत करने को भी सहन नहीं कर पाता। इतनी संकीर्ण मनोवृत्ति का पुरूष हमें इस कहानी में देखने को मिलता है ।

इस प्रकार मन्नू भण्डारी की कहानियों में अर्न्तद्वन्द्व का सशक्त चित्रण हुआ है ।

टूटते बनते जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति

आधुनिक युग में जो पुराने एवं नये विचारों के बीच टकराहट हो रही है, उससे पुराने मूल्य टूट रहे है और मूल्यों का निर्माण हो रहा है। मन्नूजी ने अपने संक्रमणकालीन जिन्दगी का चित्र प्रस्तुत करते समय टूटते बनते मूल्यों का बोध कराया है । टूटते हुय मूल्यों को चित्रित करने वाली मन्नू जी की कहानी 'तीसरा हिस्सा' है। इसमें पति –पत्नी के संबंधों में टूटन और पिता–पुत्र के संबंधों में भी टूटन की स्थिति स्पष्ट हो गई है। पिता शेरा बाबू अपने बेटे सुधीर को रात को देर से आया हुआ देखकर जरा सी कड़क आवाज में डाँटते है, तो सुधीर का उससे भी ज्यादा कड़क आवाज में उत्तर देना पिता पुत्र की जुबान का बेरूखापन स्पष्ट करता है। यह भी स्पष्ट हो जाता है कि नयी पीढ़ी के लिये पिता के आदर्श का कोई मूल्य नहीं है। इस प्रकार टूटते मूल्यों का चित्रण 'दीवार बच्चे और बरसात', 'अभिनेता', 'मैं हारगई', 'क्षय', 'सजा', 'बन्द दराजों का साथ', 'ऊँचाई' आदि कहानियों में हुआ है। नये और पुराने मूल्यों के संक्रमण की स्थिति का चित्रण गीत का चुम्बन, आते–जाते यायावर, त्रिशंकु आदि कहानियों में हुआ है।

बनते हुये मूल्यों का चित्रण ऊँचाई और यही सच है आदि कहानियों में हुआ है। इन उपर्युक्त कहानियों में राजनीतिक मूल्यों का भी चित्रण हुआ है।

उद्देश्य व महत्त्व

साहित्यकार अपनी साहित्यिक रचना में यथार्थवाद को स्थान देते है । मन्नू जी कहानियों का मूलस्वर भी यही है उनका यथार्थ न प्रेमचन्द जी के समान आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद है न यथार्थोन्मुखी आदर्शवाद है बल्कि वे विशुद्ध यथार्थवादी श्रेष्ठ कहानीकार है। इनके यथार्थवाद में आधुनिक नारी की यथार्थ स्थिति का चित्रण, नगरीय परिवेश की समस्याओं एवं आधुनिक व्यक्ति की यथार्थ स्थिति का चित्रण मिलता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। इसलिये साहित्य में समाज की वास्तविकता का चित्रण सही रूप से प्रस्तुत होना चाहिए। इसी बात का पालन लेखिका ने अपने कहानी साहित्य में किया है । इसी संबंध में प्रा.उ.मा केवलराम लिखती है – ''काल सापेक्षित यथार्थ की प्रमुख विशेषता है इसका भी मन्नू जी ने निर्वाह किया है। स्वतंत्रोत्तर काल में भी काल का प्रभाव मध्यमवर्गीय समाज पर पड़ा है। उसका यथार्थ चित्र उपस्थिति करना ही साहित्य के प्रति ईमानदारी और पाठकों के प्रति न्याय करना था। मन्नू जी ने कहीं पर अति यथार्थवाद का प्रदर्शन करना उचित नहीं समझा। अतियथार्थवाद के नाम पर जली भोड़ी, अवांछनीय या अमंगल बातें कही जाती है, वैसी इन्होनें कहीं पर भी नहीं कही है''6

आधुनिक युग में आदर्शों को लेकर चलने वालों की यथार्थ स्थिति का चित्रण क्षय, तीसरा हिस्सा आदि कहानियों में मिलता है ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि मन्नू भंडारी की कहानियों में सीधे सादे प्रसंगों की अभिव्यक्ति विशिष्ट ढ़ंग से हुई है ऐसे अनेक प्रसंग उकी कहानियों में चित्रित हुए है। किसी भी कृति में संवेदना अथवा मूल तथ्य का सर्वप्रथम स्थान होता है यद्यपि कृति में मूल भाव की प्रधानता रहती है लेकिन कला का स्थान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं होता। कला का तात्पर्य कृति के शिल्प से लगाया जाता है। अमूर्त भाव का मूर्त अथवा सूक्ष्म का स्थूल रूप ही कला है। यदि भाव कृति की आत्मा है तो कला या शिल्प उसका शरीर। दोनों एक–दूसरे के पूरक है। मन्नू भंडारी के साहित्य में प्रेमाभिव्यक्ति, मूल्य बोध, विशुद्ध धार्मिक चिन्तन बोध, मूल्य परिवर्तन, अलगाव बोध, वैमनस्य, प्रेम की विशदता रूढ़ियों का विरोध, किशोर मनोविज्ञान अनके प्रकार के संवेदना रूपों की अभिव्यक्ति हुई है।

इस प्रकार संवेदना भाव का मूल बिन्दु है। बाबू गुलाब राय ने भाव को कथावस्तु की आत्मा से ओर कला की आकृति से जोड़ा है। कृतिकार चूंकि भावाव्यक्ति में कला का आश्रय लेता है इसलिए वह कलाकार कहलाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *वृहद् हिन्दी कोष, सम्पादक – कालिया प्रसाद राज मुकन्दीलाल–पृ.सं. 175*
2. *नई कहानी के विविध प्रयोग, लेखक – हरिदत्त शर्मा–पृ.सं. 106*
3. *त्रिशंकु (कहानी संग्रह) लेखिका – मन्नू भंडारी, पृ.सं. 48*
4. *त्रिशंकु (कहानी संग्रह) लेखिका – मन्नू भंडारी, पृ.सं. 51*
5. *नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति, लेखक– डॉ. देवीशंकर अवस्थी पृ.सं. – 222*
6. *मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, लेखिका – प्रा. उमा गुरूदप्पा केवलराम, पृ.सं. – 135*
7. *स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष*